

जे.पी.एस.सी.

झारखण्ड सिविल सेवा मुख्य परीक्षा अध्ययन सामग्री

पूर्णतः संशोधित एवं अद्यतन

सामाजिक विज्ञान

(इतिहास एवं भूगोल)

प्रश्नपत्र – III



<https://www.developindiagroup.co.in/>

PUBLISHED BY

Develop India Group

Allahabad (U.P.), India

Mobile : 08756987953

email : subscriptiondevelopindia@gmail.com

Website : <https://developindiagroup.co.in/>

Edition : 2019

Develop India Group Aims

We conduct Study Material Programme, All India Correspondence Courses, Test Series Programmes for various competitive exams. All things prepared by our expert faculties. Our aims to provide quality of comprehensive materials in a single place at your home according to your requirement.

Notes Prepared by

All study notes of DEVELOP INDIA GROUP prepared by our expert team and revised time to time. We have published these notes with carefully, but we can't take guarantee for human as well as printing mistakes. If you want to give your feedback you can write us email : subscriptiondevelopindia@gmail.com

Terms & Conditions

If you want to buy any kind of study materials/previous year question papers, you can contact us.

Privacy Policy & Copywrite

All matter compile in this notes from various sources believed to be reliable. We published very carefully to this matter, its authors can not take guarantee the accuracy or completeness of any information published herein and neither Develop India Media Group nor its authors shall be responsible for any errors, omissions or damage arising out of use of this information.

No part of this notes may be reproduce or transemitted without the written permission of the publisher.

@ All right reserved. Refund is not available.

Note : All disputes will respect to this publication shall be subject to jurisdiction of the courts, tribunals and forums of Allahabad, India.

CORPORATE OFFICE

Develop India Media Group

Allahabad (U.P.); India

Mobile : 08756987953

emails : subscriptiondevelopindia@gmail.com,

developindiamediagroup@gmail.com

Website : <https://developindiagroup.co.in/>

इतिहास

सरयू राय की अध्यक्षता में गठित समिति की अनुशंसा के अनुसार नये पाठ्यक्रम को आंशिक संशोधन के साथ मंजूर किया है। समिति ने पूरी परीक्षा के लिए 1200 अंक निर्धारित किये थे। कैबिनेट ने इसे 1150 कर दिया है। सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा के सी-सैट के द्वितीय पत्र को समाप्त कर दिया गया है। जेपीएससी की परीक्षाओं में अधिकतम उम्र सीमा (अपर एज लिमिट) की गणना पूर्व निर्धारित कट ऑफ डेट 01.08.2010 ही होगी। वहीं न्यूनतम उम्र सीमा (लोअर एज लिमिट) की गणना के लिए कट ऑफ डेट 01.08.2015 के बदले 01.08.2016 कर दिया गया है। अब भविष्य में प्रकाशित होनेवाले परीक्षा संबंधी विज्ञापनों की गणना अंक (जैसे पांचवीं, छठी) से न होकर वर्ष से की जायेगी।

जेपीएससी ने राज्य सिविल सेवा 2016 के पीटी परीक्षा (Revised PT Result of Jharkhand State Civil Services Exam & 2016) Advt- No- 23/2016) का परिणाम 11.08.2017 को घोषित कर दिया है। आयोग के द्वारा जारी परीक्षा परिणाम में कुल 5138 अभ्यर्थी सफल हुए हैं, जो निर्धारित रिक्त 326 पदों के मुकाबले 15 गुणा है।

झारखंड लोक सेवा आयोग की ओर से 18.12.2016 को ली गई छठी सिविल सेवा परीक्षा का रिजल्ट 24.02.2017 को घोषित कर दिया था। जेपीएससी ने 326 पदों के विरुद्ध 5138 परीक्षार्थियों को पीटी परीक्षा में सफल घोषित किया था। अब मुख्य परीक्षा 15 मई से 9 जून तक आयोजित होनी थी।

दो बार मुख्य परीक्षा भी स्थगित की जा चुकी है। सरकार ने अभ्यर्थियों की मांग पर प्रारंभिक परीक्षा का संशोधित रिजल्ट जारी करने के लिए सात फरवरी 2018 को आयोजित कैबिनेट की बैठक में नियमावली में संशोधन कर दिया था। सरकार का मानना था कि संशोधन से अभ्यर्थियों को बड़ी राहत मिलेगी। मुख्य परीक्षा में शामिल होनेवाले अभ्यर्थियों की संख्या बढ़ कर लगभग 34 हजार हो जायेगी। कैबिनेट से पास नयी नियमावली के तहत मुख्य परीक्षा में शामिल होने के लिए प्रारंभिक परीक्षा में सामान्य वर्ग के लिए 40 प्रतिशत, पिछड़ा वर्ग के लिए 36.5 प्रतिशत, अति पिछड़ा वर्ग के लिए 34 प्रतिशत और एसटी, एससी व महिला के लिए 32 प्रतिशत प्राप्तांक तय किया गया है।

प्राचीन भारत का इतिहास

प्रागैतिहास एवं आद्य इतिहास

प्रागैतिहास एवं आद्य इतिहास नामक इस इकाई में पुरा पाषाण, मध्य पाषाण, नव पाषाण तथा ताम्र पाषाण जैसे कालों को समावेशित किया गया है। इस इकाई को पढ़ने के उपरांत आप अभ्यर्थियों को मानव जीवन के विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी। मूलतः प्रागैतिहासिक काल के अध्ययन के उपरांत मानव के वन्य जीवन से ग्रामीण जीवन तक के विकास को समझा जा सकता है। इस विषय के अध्ययन के परिणामस्वरूप मानव की जीवनशैलीगत विविधता व विकास सम्बंधी प्रमुखता की जानकारी प्राप्त होती है। इस दौरान प्रारंभिक खाद्य संग्रहण प्रक्रिया, पशु शिकार व पशुपालन के साथ-साथ कृषि आधारित मानव जीवनशैली के विकास की प्रक्रिया को समझा जा सकता है। इस काल के दौरान मानव ने शिकारी व खाद्य संग्राहक वन्य जीवनशैली से कृषि आधारित ग्रामीण जीवनशैली का विकास किया था। इस काल को पत्थरों के उपकरणों के प्रयोग के कारण पाषाण काल के नाम से जाना जाता है।

ताम्र पाषाण काल, पाषाण काल के बाद के विकास की कहानी है। वह काल जिसके अंतर्गत मानव ने पत्थरों के उपकरणों के प्रयोग के साथ-साथ तांबे (मानव द्वारा प्रयुक्त प्रथम धातु) का प्रयोग भी प्रारंभ कर दिया था, ताम्र पाषाण काल के नाम से जाना जाता है। इस विषय का अध्ययन करने के उपरांत आपको मानव जीवनशैली के विकास की अगली अवस्था सम्बंधी जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

प्रागैतिहास काल

लिपि विहीन प्राचीन मानव के क्रियाकलाप वाले काल को प्रागैतिहास काल के नाम से जाना जाता है। प्राचीन मानव के द्वारा भरण-पोषण हेतु शिकार प्रक्रिया के दौरान सामान्यतः पाषाण उपकरण के प्रयोग करने के कारण इस काल को पाषाण काल भी कहा जाता है। पाषाणोपकरणों की विविधता व जीवन शैली की प्रमुखता के आधार पर पुरातत्वविदों व इतिहासकारों ने इस काल को तीन प्रमुख कालों में विभाजित किया है,

Why should read “Develop India Group” Study Material?

डेवेलप इंडिया ग्रुप अध्ययन सामग्री को क्यों पढ़ना चाहिए?

1. Develop India Group (DIG) is India's largest complete study materials provider website. डेवेलप इंडिया ग्रुप (DIG) भारत की सबसे बड़ी अध्ययन सामग्री प्रदाता वेबसाइट है।
2. Develop India Group (DIG) prepared their study materials in the guidance of highly qualified and experience mentoring specialist. डेवेलप इंडिया ग्रुप (DIG) ने सुयोग्य और अनुभवी सलाह विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में अपनी अध्ययन सामग्री तैयार की है।
3. Develop India Group (DIG) study materials have been prepared strictly according to revised syllabus. डेवेलप इंडिया ग्रुप (DIG) अध्ययन सामग्री पूर्णतया संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गई है।
4. Only aim behind preparing these study materials is to provide study material to those students, who are unable to attend coaching classes in mega cities. इन अध्ययन सामग्रियों को तैयार करने का उद्देश्य केवल उन छात्रों को अध्ययन सामग्री प्रदान करना है, जो महानगरों में कोचिंग क्लासेस में भाग लेने में असमर्थ हैं।
5. All kind of facts & data in this material have been collected from authentic sources. इस सामग्री में सभी प्रकार के तथ्यों और डेटा को प्रामाणिक स्रोतों से एकत्र किया गया है।
6. All kind of data is updated in quarterly in our study notes. हमारी अध्ययन सामग्रियों में सभी प्रकार के आंकड़ों को तिमाही में अपडेट किया जाता है।
7. Develop India Group (DIG) study materials have been prepared in simple language so that student can memorize easily and better understand. डेवेलप इंडिया ग्रुप (DIG) अध्ययन सामग्री सरल भाषा में तैयार की गई है ताकि छात्र आसानी से और बेहतर ढंग से समझ सकें।
8. Complete syllabus of preliminary and main exam has been covered in this study material. प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा का पूरा पाठ्यक्रम इस अध्ययन सामग्री में शामिल किया गया है।
9. All important and relevant points have been highlighted in bold, underline and italic ways. बोल्ड, रेखांकन और इटैलिक तरीके से सभी महत्वपूर्ण और प्रासंगिक बिंदुओं को हाइलाइट किया गया है।
10. We have prepared our study materials with trained, talented, experienced team for each subject. They are supported by subject experts. हमने प्रत्येक विषय के लिए प्रशिक्षित, प्रतिभाशाली, अनुभवी टीम के साथ और विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में अध्ययन सामग्री तैयार की है।
11. Once you will read these study materials, you will surely find 70 to 80 % questions in next coming examination. एक बार जब आप ये अध्ययन सामग्री पढ़ लेंगे, तो आपको निश्चित रूप से आने वाली परीक्षा में 70 से 80: प्रश्न मिलेंगे।
12. So BUY TODAY and secure your future. इसलिए आज ही खरीदें और अपना भविष्य सुरक्षित करें.

Call us for more details : +91 8756987953

ये हैं :

1. पुरा पाषाणकाल (समय काल : आरम्भिक जीवन से 10,000 ईसा पूर्व तक लगभग)
2. मध्य पाषाणकाल (समय काल : 8–10,000 ईसा पूर्व से 4000 ईसा पूर्व तक लगभग)
3. नव पाषाणकाल (समय काल : 4000 ईसा पूर्व से 3000 ईसा पूर्व तक लगभग)

पाषाणकाल के काल निर्धारण तथा उसकी प्रमुखताओं को लेकर सम्पूर्ण विश्व के इतिहासकारों में मत विभिन्नता है, किंतु बहुमत के अनुसार भारतीय प्रागैतिहासिक काल कुछ लाख वर्ष पूर्व से लेकर लगभग 3000 वर्ष पूर्व तक माना जाता है। इस दौरान मानव ने विभिन्न प्रकार के पाषाणोपकरणों के प्रयोग के साथ-साथ विविध प्रकार की जीवनशैली का प्रयोग किया था।

पुरा पाषाण काल

भारतीय पुरा पाषाण कालीन मानव जहां आखेटक (शिकारी) व खाद्य संग्राहक जीवनशैली का प्रयोग करता था, वहीं पाषाणोपकरणों के रूप में पीबल आधारित चापर-चापिंग उपकरण, हस्त कुठार (हैंड एक्स) तथा फलक (फ्लेक्स) व ब्लेड आधारित उपकरणों का प्रयोग करता था। समय काल तथा उपकरण आधारित विविधता वाले इस काल को इतिहासविद पुनः तीन उप कालों में विभाजित करते हैं, जो इस प्रकार हैं :

- निम्न पुरा पाषाणकाल (आरम्भिक काल से 1,00,000 ई.पू. तक लगभग)
- मध्य पुरा पाषाणकाल (1,00,000 ई.पू. से 40,000 ई.पू. तक लगभग)
- उच्च पुरा पाषाणकाल (40,000 ई.पू. से 10,000 ई.पू. तक लगभग)

पुरा पाषाण कालीन मानव विविध प्रकार के पाषाणोपकरणों का प्रयोग करता था, जो निरंतर विकसित होते चले गए थे। निम्न पुरा पाषाण काल के दौरान चापर, चापिंग, हस्त कुठार, क्लीवर, स्क्रैपर व बेधक जैसे उपकरणों का प्रयोग कर मानव अपना जीवनयापन करता था। प्रारम्भिक काल के ये हथियार बेडौल व भोंडी आकृति वाले होते थे, जिनसे इस काल का मानव शिकार करने व उसे चीर-फाड़ कर खाने में उपयोग करता था। आगे चलकर पत्थरों से काटकर निकाले गए फलक (फ्लेक्स) जैसे धारदार पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़ों को तीर के नोक के रूप में प्रयोग करते हुए उच्चस्तरीय पाषाणोपकरणों का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। ये उपकरण मध्य पुरा पाषाण काल के दौरान प्रयोग किए जाते थे। उच्च पुरा पाषाण काल तक आते-आते प्रागैतिहासिक मानव ने ब्लेड आधारित पतले व धारदार छोटे-छोटे पाषाणोपकरणों का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया था तथा एक सफल शिकारी जीवन व्यतीत करने लगे थे। उपरोक्त पुरा पाषाणकाल के ये पाषाणोपकरण आग्नेय पत्थरों के साथ-साथ क्वार्टजाइट, जैस्पर व सूर्यकांत जैसे कीमती व अर्धकीमती पत्थरों के सहयोग से निर्मित किए जाते थे। अपवादात्मक साक्ष्यों के रूप में प्राप्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि पाषाण कालीन मानव सम्भवतः अस्थियों का प्रयोग भी करने लगा था। पुरा पाषाण कालीन मानव की जीवनशैली 'आखेटक व खाद्य संग्राहक' प्रकार की थी। इस काल के मानव का जीवन पूर्णतया प्राकृतिक था। उसका भोजन शाकाहारी व मांसाहारी था। शाकाहार के रूप में वनों में उत्पादित होने वाला कंद मूल फल ही वह खाया करता था। मांसाहार के रूप में शिकार किए गए जीव का सामान्यतः कच्चा मांस ही वह खाया करता था। शाकाहार व मांसाहार के साथ इस काल के मानव का जीवन अस्थिर, खानाबदोश तथा अव्यवस्थित होता था।

प्रारम्भिक उत्खननों से इस संस्कृति के दो प्रमुख संकेद्वण की जानकारी प्राप्त होती है। इसे सोहन नदी घाटी संस्कृति अथवा चौतरा संस्कृति तथा मद्रासीय संस्कृति कहते हैं। उत्तर भारत में सिंधु नदी की सहायक सोहन नदी की घाटी में चौतरा नामक स्थल से जिस प्रागैतिहासिक संस्कृति की जानकारी प्राप्त होती है, उसे चौतरा संस्कृति कहते हैं। सोहन संस्कृति से मूलतः पीबल आधारित चापर-चापिंग उपकरण मिले हैं, जिस कारण इसे 'चापर-चापिंग संस्कृति' भी कहते हैं। यद्यपि प्रमुखता के रूप में यहां से हस्त कुठार के साक्ष्य भी मिले हैं। दक्षिण भारत में मद्रास के निकट 'अतिरमपक्कम' तथा 'बदमदुरै' नामक स्थल से प्रागैतिहास कालीन हस्त कुठार प्रकार के पाषाणोपकरण बहुतायत में मिले हैं। इस संस्कृति की भौगोलिक प्रमुखता के कारण इसे 'मद्रासीय संस्कृति' तथा उपकरणिय प्रमुखता के कारण 'हस्तकुठार संस्कृति' कहते हैं। उपरोक्त दोनों प्रमुख सांस्कृतिक स्थलों के अतिरिक्त शिवालिक पहाड़ी श्रेणियों की अन्य नदी घाटियों, राजस्थान में लूनी, गम्भीर व चम्बल नदी घाटियों, गुजरात में नर्मदा व माही नदी घाटियों के साथ-साथ बिहार, बंगाल, उड़ीसा तथा दक्षिण भारत के आंध्र, तमिलनाडु, कर्नाटक व महाराष्ट्र जैसे क्षेत्रों से भी इस काल से उत्खननिक साक्ष्य निरंतर प्राप्त हो रहे हैं।

मध्य पाषाण काल

संक्रांति कालीन मध्य पाषाण काल, पुरा पाषाण से नव पाषाण काल की ओर विकसित होती मानवीय सभ्यताओं की प्रमुखताओं का क्रमशः विकास काल था। इस दौरान मानव प्राकृतिक खाद्य संग्राहक व आखेटक मानव के साथ-साथ पशुपालन करने, प्रारम्भिक स्तर पर कृषि कार्य करने तथा सूक्ष्म पाषाणोपकरण का प्रयोग करने वाला मानव था। जिसके हथियार आधे से पौने इंच वाले सूक्ष्म पाषाणों से बने होते थे। इन्हें क्वार्टजाइट, गोमेद, चर्ट, कैलसिडेनी, स्फटिक, जैस्पर, कार्नेलियन जैसे कीमती व अर्ध कीमती पत्थरों से बनाया जाता था, जो छोटे होते हुए भी उपयोगी व संघातिक होते थे। इन उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रैपर, तक्षणियों (ब्यूरिन), बेधक, अर्ध चंद्राकार, एकधार व समलम्ब इत्यादि थे।

इस काल का भौगोलिक विस्तार सुदूर उत्तरी क्षेत्रों को छोड़कर लगभग सम्पूर्ण भारत भर में था। इस काल के पुरास्थल राजस्थान में तिलवारा (बाडमेर जनपद), बागौर (भीलवाड़ा जनपद), गुजरात में आरवज (मेहसाना जनपद), लंघनाज, बलासना तथा हरिपुर (मेहसाना जनपद), देवनीमोर